ISSN 2454-2725
Peer Reviewed Journal

105-107
जनवरी-मार्च 2024 (सयुंक्त)

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

जनकृति

www.jankriti.com

संपादक: डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

Nietjuh IPI Value (2.65)

जनकृति

अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष 9, अंक 105-107 **जनवरी-मार्च 2024**

परामर्श मंडल

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रो. रमा, डॉ. हरीश नवल, प्रो. हरीश अरोड़ा, डॉ. प्रेम जन्मेजय, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रा, प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. कपिल कुमार, प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन

संपादक

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा
(सहायक प्रोफ़ेसर, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार)

सहायक संपादक

प्रो. पुनीत बिसारिया
(प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

संपादन मण्डल/विशेषज्ञ समिति

डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ , महाराष्ट्र)
डॉ. दीपेन्द्र सिंह जाड़ेजा (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा)
डॉ. नाम देव (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. प्रज्ञा (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रचना सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रूपा सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बाबु शोभा राम गोवेरमेंट आर्ट कॉलेज, राजस्थान)
डॉ. पल्लवी (सहायक प्रोफ़ेसर, तेजपूर विश्वविद्यालय, असम)
डॉ. मोहसिन खान (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जेएसएम कॉलेज, रायगढ़, महाराष्ट्र)
डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा (सहायक प्रोफ़ेसर, मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम)
डॉ. प्रवीण कुमार (सहायक प्रोफ़ेसर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश)
डॉ. मुन्ना कुमार पाण्डेय (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी (सहायक प्रोफ़ेसर, जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ, राजस्थान)
डॉ. अंबिकेश त्रिपाठी (सहायक प्रोफ़ेसर, गांधी एवं शांति विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
डॉ. ज्ञान प्रकाश (सहायक प्रोफ़ेसर, बिहार)

संपादन सहयोग

डॉ. चन्दन कुमार (दिल्ली)
डॉ. राकेश कुमार (दिल्ली)

संस्थापक सदस्य

कविता सिंह चौहान (मुंबई)
डॉ. जैनेन्द्र कुमार (बिहार)

अंतरराष्ट्रीय सदस्य

प्रो. अरुण प्रकाश मिश्रा (स्लोवेनिया), डॉ. इंदु चंद्रा (फ़िजी), डॉ. सोनिया तनेजा (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी), डॉ. अनिता कपूर (अमेरिका), राकेश माथुर (लंदन), रिद्या (श्री लंका), मीना चोपड़ा (कैनेडा), पूजा अनिल (स्पेन)

जनकृति अव्यवसायिक
जनवरी-मार्च 2024 (सयुंक्त अंक) अंक 105-107, वर्ष 9

सहयोग राशि : 60 रुपये (वर्तमान अंक)
150 रुपये (संस्थागत)

व्यक्तिगत सदस्यता : 800 रुपये (वार्षिक)
3000 रुपये (पंचवर्षीय)
5000 रुपये (आजीवन)

संस्थागत सदस्यता : 1200 रुपये (वार्षिक)
6000 रुपये (पंचवर्षीय)
10000 रुपये (आजीवन)

(डिजिटल प्रति सदस्यता)

बैंक खाता विवरण : Account holder's name- Kumar Gaurav Mishra
Bank name - Punjab National Bank
Account type – saving account
Account no. 7277000400001574
IFSC code- PUNB0727700

पत्र व्यवहार : फ्लैट- 401, वृंदावन अपार्टमेंट
फजलगंज, मंगलम होटल, ओल्ड जीटी रोड़, सासाराम, रोहतास, बिहार
पिन कोड: 821115, संपर्क- +918805408656

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक है।

ध्यानार्थ : अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप जनकृति में शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्यिक रचनाएँ, वैचारिक लेख, साक्षात्कार एवं पुस्तक समीक्षा भी प्रकाशित होती है। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

JANKRITI
Interdisciplinary Peer-Reviewed Bilingual International Monthly Magazine
Editor: Dr. Kumar Gaurav Mishra
Language: Bilingual (Hindi & English)
Publisher: JANKRITI
ISSN: 2454-2725

संपादकीय

आप सभी पाठकों के समक्ष जनकृति का जनवरी-मार्च 2024 सयुंक्त अंक प्रस्तुत है। इस अंक में आप साहित्य, कला, इतिहास, दर्शन, धर्म एवं संस्कृति इत्यादि क्षेत्रों के महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित शोध आलेख, लेख पढ़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त अंक में आप साहित्यिक रचनाएँ भी पढ़ सकते हैं।

जनकृति एक बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका है। यह पूर्ण रूप से विमर्श केन्द्रित पत्रिका है, जहां आप विभिन्न अनुशासन के नवीन विषयों को एकसाथ पढ़ सकते हैं। पत्रिका में एक ओर जहां साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित की जाती है वहीं नवीन विषयों पर लेख, शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

- **डॉ. कुमार गौरव मिश्रा**

जनकृति

अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष 9, अंक 105-107 **जनवरी-मार्च 2024**

अनुक्रम

संपादकीय4

कला-विमर्श

Analyzing the Deeper Strands of Indian Modernism and Art: A Study of Contextual Modernism and Modern Indian Theatre / Suchitra Singh 8

काव्य नाटक: मंच प्रस्तुति एवं समस्याएँ / आशा 31

भारतीय लोकनाट्य में बिदेसिया का प्रदेय / डॉ. सतेन्द्र शुक्ल 46

हिन्दी नुक्कड नाटकों का सामाजिक परिदृश्य / डॉ. प्रदीप कुमार 59

भारतीय संगीत में शास्त्रीय और लोक-वाद्यों का विकास / शैलेन्द्र वर्मा, डॉ. रवि कुमार पण्डोले 67

लोकगीतों में स्वांग का महत्व / खुशबू रायकवार, डॉ. नीना श्रीवास्तव 75

दलित एवं आदिवासी -विमर्श

Ethno medicine and Traditional Healing Practices among the Ho of Jharkhand: A Multispecies Inquiry / Neha Kumari 82

बंजारा समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि / डॉ. बसुंधरा उपाध्याय 104

दलित काव्य : दलित चेतना और अनुभूति का यथार्थ / डॉ. सुमित कुमार 114

स्त्री-विमर्श

निर्मला पुतुल और उनकी स्त्री चेतना / कालू तामांग 122

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण / वैशाली 133

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री जीवन के चित्र / डॉ. सारिका देवी 140

किन्नर-विमर्श

उच्च शिक्षा में ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों के अधिकारियों की रक्षा के लिए नीति-2021 :दिल्ली विश्वविद्यालय के संदर्भ में / विशाल कुमार गुप्ता, प्रो. राजेश 148

मीडिया-विमर्श

Communication for Women's Empowerment and Community Radio / Umesh Sharma 164

डिजिटल युग में पत्रकारिता की चुनौतियां / अमित दत्ता 186

भारत के जनसंचार में कार्टूनों की परम्परा और गाँधी / संगीता केशरी 198

सोशल मीडिया के युग में हिन्दी पत्रकारिता / डॉ. कुमार कौस्तुभ 212

ETHICAL CHALLENGES IN NEW MEDIA IN INDIA: AN ANALYTICAL STUDY / Dr. Sankershan Paripurnan 223

शिक्षा-विमर्श

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: अध्यापक शिक्षा में बहुभाषिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन / श्री आनंद दास 231

नई शिक्षा नीति में शिक्षण के नए आयाम एवम शिक्षक कुशलता / उज्ज्वला भोसले, डॉ. संतोष कुमार शर्मा, डॉ.एन. पापा राव 242

भाषिक-विमर्श

स्वाधीन भारत में हिंदी का विस्तार/ श्रीमती श्वेता सिंघल 256

देवनागरी लिपि एवं फ़ॉन्ट / डॉ.के. पद्मा रानी 291

अल्पसंख्यक-विमर्श

विभाजन की त्रासदी और अल्पसंख्यक वर्ग ('ज़िंदा मुहावरे' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)/ चंचल कौशिक 299

दर्शन

सामाजिक जीवन में दर्शन की महत्ता / भुमिका मनसुख सोलंकी 307

समसामयिक-विमर्श

कृषि तकनीकी परिवर्तन का अर्थ, महत्व एवं उपयोगिता का एक अध्ययन / पूनम यादव, डॉ. सलिक सिंह 313

साहित्यिक-विमर्श

सन्त काव्यान्दोलन का उदय और आवश्यकता / डॉ. शीला आर्या 325

कश्मीर में संत परम्परा : एक विवेचन / प्रो. रूबी जुत्शी 345

हिंदी कहानियों में मानसिक दिव्यांग चेतना का अन्वेषण / वैशाली सिंघल 357

विकलांग विमर्श की हिन्दी कहानियाँ और गुलकी बन्नो / किसान गिरजाशंकर कुशवाहा, दीपक नामदेव 365

निलज वनिता का सांस्कृतिक भौतिकवाद / अमर सिंह 373

यथार्थ की भोथरी जमीन और तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ / डॉ . अंजु 391

मेटाफिक्शन और उदयप्रकाश की कहानियाँ / डॉ. मीनू गेरा 402

हरिशंकर परसाई की कहानियों के जानवर पात्र / चन्द्रशेखर कुशवाहा 410

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में मानवतावादी चेतना / डॉ. पुरुषोत्तम पाटील 422

समकालीन हिंदी कविता में वर्तमान गीत-ग़ज़ल की अहमियत / डॉ॰ सोमाभाई पटेल 428

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य / एम एस सरस्वती दुबे 444

मजदूरों की 'तालाबंदी' / मनोजकुमार सुभाष शर्मा 457

बंजारा स्त्री अलंकार / डॉ. कुशावती आमनर 473

पूस की रात : स्त्री किसान की कथा / डॉ. उमा मीणा 481
'डार्क हॉर्स' : सिविल सर्विस की एक अनकही दास्तान.. / डॉ. प्रियंका 493
उदय प्रकाश की कहानियों में उत्तर-आधुनिकतावाद / कोमल कुमारी 502
संस्कृति एवं साहित्य / डॉ. सजीथा, डॉ. रेखा आर. एस. 509
ग्रामीण संस्कृति के आईने में विवेकी राय की कहानियाँ / हर्ष सिंह 515

धर्म एवं संस्कृति
भारतीय समाज के जीवन में श्रीराम / प्रियंका सौरभ 526

साहित्यिक रचनाएँ
कविता
सैयद दाऊद रिज़वी 533

कहानी
धार्मिकता की शिकार / रामेश्वर महादेव वाढेकर 535

लघुकथा
पीपल की पुकार / विकास बिश्नोई 545

पुस्तक समीक्षा
कविता संग्रह 'तुम तब आना- राकेश कबीर / समीक्षक: विरेश 'श्रीराजे' 546

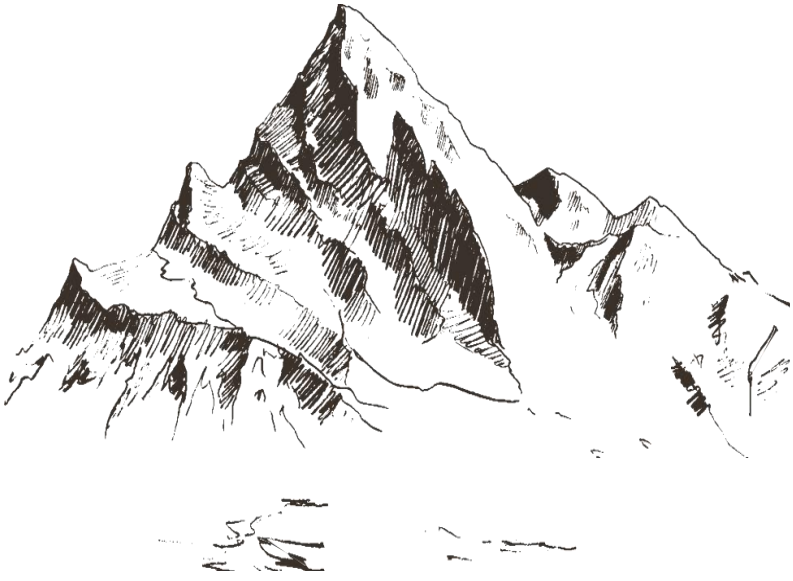

Analyzing the Deeper Strands of Indian Modernism and Art: A Study of Contextual Modernism and Modern Indian Theatre

Suchitra Singh
Independent Researcher
University of Delhi
suchitrasingh1995@gmail.com
Phone No. 8130950201

Abstract

Modernism as Habermas notes in his Essay 'Modernity- An Incomplete Project' in association with its etymological roots in Latin with term "Moderns" was used to establish a new Europe (Christian) away from its "Roman, Pagan Past". At the beginning of twentieth century, it emerged to be a literary and art movement dissociating from the obsolete past of realism and central position of Enlightenment in European culture. Modernism in art and literature are rooted in the vision of Europe in the wake of two World Wars and sees art to be an autonomous entity having its definition and identity contained in its form, colors and fragmentations and the boundaries of frame. The advent of various art movements such as Dadaism, Surrealism, Expressionism, Cubism etc. were established on the universal autonomous character of art and its self-sufficing characteristics.

In the wake of nationalistic reformulation and modernization of Indian society, the artists (Sculptures, painters, Poets) and writers took upon themselves to imitate the West. India being in its nascent stage of reconstruction could not possibly dissociate itself from its cultural, religious, socio-economical contexts. During the times when internationalization of art and modernity took place, few artists in India emerged who created an efficient mixture of regional complexity, cultural ambiguity and socio-economic challenges faced by Indian society. These artists are namely Abanindranath Tagore, Binod Behari Mukherjee, Ramkinker Baij and Nandlal Bose; all the artists are coming from